श्री हनुमान जी की आरती

॥ श्री हनुमंत स्तुति ॥

मनोजवं मारुत तुल्यवेगं,
जितेन्द्रियं, बुद्धिमतां वरिष्ठम् ॥

वातात्मजं वानरयुथ मुख्यं,
श्रीरामदुतं शरणम प्रपद्धे ॥

॥ आरती ॥

आरती कीजै हनुमान लला की । दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ॥
जाके बल से गिरवर काँपे । रोग-दोष जाके निकट न झाँके ॥

अंजनि पुत्र महा बलदाई । संतन के प्रभु सदा सहाई ॥
आरती कीजै हनुमान लला की ॥ दे वीरा रघुनाथ पठाए ।

लंका जारि सिया सुधि लाये ॥ लंका सो कोट समुद्र सी खाई ।
जात पवनसुत बार न लाई ॥ आरती कीजै हनुमान लला की ॥

लंका जारि असुर संहारे । सियाराम जी के काज सँवारे ॥
लक्ष्मण मुर्छित पड़े सकारे । लाये संजिवन प्राण उबारे ॥

आरती कीजै हनुमान लला की ॥ पैठि पताल तोरि जमकारे ।
अहिरावण की भुजा उखारे ॥ बाईं भुजा असुर दल मारे ।

दाहिने भुजा संतजन तारे ॥ आरती कीजै हनुमान लला की ॥
सुर-नर-मुनि जन आरती उतरें । जय जय जय हनुमान उचारें ॥

कंचन थार कपूर लौ छाई । आरती करत अंजना माई ॥
आरती कीजै हनुमान लला की ॥ जो हनुमानजी की आरती गावे ।

बसहिं बैकुंठ परम पद पावे ॥ लंक विध्वंस किये रघुराई ।
तुलसीदास स्वामी कीर्ति गाई ॥ आरती कीजै हनुमान लला की ।

दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ॥

॥ इति संपूर्णम् ॥

Jay Shree Ram

www.hanumanchalisas.net